सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

• दिनेश कनोजे 'देहाती'

सृजक-सृजन-समीक्षा

दिनेश कनोजे 'देहाती'

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण: मृदुल जोशी

मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं |

अन्तरा-शब्दशक्ति के में प्रस्तुत

"सृजक"

दिनेश कनोजे 'देहाती' का परिचय

नाम- दिनेश कनोजे देहाती

माता- श्रीमति अंजना देवी कनोजे

पिता - श्री रामचंद कनोजे

पत्नि- श्रीमति पुष्पा कनोजे

जन्म तिथि- १०/१०/१९६६

जन्म स्थान- ग्रा सावंगी (कटंगी) बालाघाट मध्य प्रदेश

शिक्षा- बी काम, एम ए (समाज शास्त्र), आई टी आई, डी आई आर पी एम, कला शिरोमणी.

कार्यक्षेत्र- चार्जहैंड मेकेनिकल (मॉयल लिमिटेड तिरोड़ी),

अध्यक्ष साहित्य संगम, लोकप्रिय हास्य व्यंग्य कवि।

मो. 9893578322

सामाजिक क्षेत्र - प्रचार मंत्री- अखिल भारतीय विश्वकर्मा सघठन नागपुर, सामाजिक व्यवहार राष्ट्रीय कर्तव्य हेतु शालेय विधार्थियो मे विचारोत्तेजन.

विधा - छंद मुक्त कविताएं, ग़ज़ल एवं गीत. हास्य व्यंग्य रचनाएं. प्रखर वक्ता

सम्मान -

शताब्दी रत्न २००१

राष्ट्रीय रामनरेश त्रिपाठी सम्मान २००३

डॉ. अम्बेडकर फेलोशिप अवार्ड२००६,

ग्रेट अचीवर अवार्ड २०१७, अन्तरा-शब्दशक्ति सम्मान,

सहित अब तक ३४ सम्मान.

अन्य उपलब्धियाँ - राष्ट्रीय क्वालिटी सर्कल सम्मेलन मे सन् २००० से निरंतर सहभागिता, अंतरराष्ट्रीय क्वालिटी सम्मेलन २००१ लखनऊ, २०१० हैदराबाद, २०१३ कोलम्बो .

प्रकाशन - . १.सृजन की बेला है(काव्य संग्रह)
२.मीठा समंदर (काव्य संग्रह)
अब तक ४० से अधिक सहयोगी संकलनो मे सहभागी कवि।

प्रसारण - वाह वाह सब टीवी, गुदगुदी ईटीवी, काव्यांजली दूरदर्शन मध्य प्रदेश, पारस टीवी एवं आकाशवाणी बालाघाट से कविताओं का प्रसारण.
७५० अखिल भारतीय कवि सम्मेलन मे काव्य पाठ एवं २७० सम्मेलन का मंच संचालन।

आत्मकथ्य

अंतस के भावों को शब्दों मे गूंथ कर प्रस्तुत करने का एक सूक्ष्म प्रयास है मेरा सृजन. अलग अलग विधाओं मे प्रस्फुटित होते विचार कभी गीत, कभी गजल तो कभी अतुकांत स्वरूप लिए साकार हुए.
मैने कभी किसी प्रतिबंध के अधीन होकर कलम नही उठाई , बस खयाल आया कलम उठी और हो गया जो होना था. जो सबसे साझा कर सकता हूँ वह जीवित है शेष को विचारणीय अनुकूलन की सीमाओं परे कर दिया ताकि अब जो हो नया ही हो. कम लिखा परन्तु कभी दिखाने के लिए नही लिखा, देखने के लिए लिखा कि कालान्तर मे भी देखूं तो वह मुझे भी प्रेरित कर सके.
सफेद कागज पर काली स्याही से उजाला ही लिखा है कभी कालिख नही पोती साहित्य की मर्यादा अपनी मर्यादा और स्वस्थ सामाजिक सरोकारों का पक्षधर हूँ मै..
जय माँ सरस्वती।

"सृजक का सृजन"

परिंदों की उड़ान

नदी की लहरों से आगे बढ़
समंदर का उफान तो देख,
पतझड़ की पुरवा से हट
आषाढ़ का तुफान तो देख.
मंज़िल पाने से पहले राही
कदमो के निशान तो देख,
पर न बांध परिंदो के देहाती
आजाद कर उड़ान तो देख.,..

दुआ

मेरी एक छोटी सी दुआ कुबूल हो जाए,
माथे का चंदन वतन की धूल हो जाए,
हाशिए पर छोड़ रखा है बेवजह जिन्हे,
गेंदा चमेली सा महकता बबूल हो जाए,
धिक्कार समझ लूंगा इस जिंदगी को मैं,
वतनपरस्ती मे मुझसे कोई भूल हो जाए।

आज

मैं को हम में बदल लो तो अच्छा लगे,..
खुशी में गम को बदल लो तो अच्छा लगे,..
जरूरतें तो मुंह चिढ़ाती है आदमी का,..
ज्यादा को कम मे बदल लो तो अच्छा लगे,..
वो भी साथ साथ चलेंगे तुम्हारे दोस्त,..
कठोर को नम मे बदल लो तो अच्छा लगे...
तुम भी जीत लोगे हर जंग जिंदगी की,..
इरादों को दम मे बदल लो तो अच्छा लगे...

सवाल अच्छा है

हम होंगे कामयाब ..
खयाल अच्छा है,
कैसे होंगे पर साब ..
सवाल अच्छा है,
समझौता है जिंदगी
ये मान लिया हमने,
प्यार से पूछा तो बोले
के हाल अच्छा है..।

प्रश्नों के घेरे

स्वयं
हूं मै प्रश्नों के
घेरे में..
अपेक्षाएं अक्सर
विस्तारित हो जाती है
सिमट जाती है
आमदनी..
क्यों आखिर..
हम अपने दायरों से
अपरिचित होते है..
संकुचन नहीं
संयम प्रभावी हो,
दूरगामी लक्ष्य
की प्राप्तियॉ
आप के व्यवहारिक
समीकरण का
संतुलन
चाहती है,..
अन्यथा
तलाश लेती है रास्ते..
अपने ही तरीके से..।

कब जागोगे

हम
आज सुबह
उठ गये..
मन बोला
उठ तो गये हो
कब जागोगे,..
या
रोज की तरह
पिछलग्गू बन
भागोगे..
क्या तुम्हारे
अपने रास्ते
अपने निर्णय
अपने सिध्दांत
अपने उद्देश्य नही है,..
बात तो सही है
किन्तु
सपनो को साकार
करने का
मन लेकर

जागना चाहता हूं
जब भी
जरूरतें
कर्तव्यों की
चादर उढ़ा कर
आदर्शो की
थपकी देते देते
सुला देती है फिर..
अगर मै कुछ
अलग करना चाहूं
तो मुझे अपने
परिवार की जिम्मेदारियाँ
भूल जाने का भय है..
इसलिए..
उठ ही पाता हूं
उनको पूरा करने
समय पर...
जागना..
उफ़्फ़
न जाने कब.????

किसके लिए..?

रोज
घूप अंधेरे को
चीर कर
अपनी किरणों को
जमी भेजता है
सूरज
किसके लिए..
सूरज की थकान
और
अंधेरे से अभिशप्त शाम
को
ढांढस बंधाने
निकल आता है
चांद..
सितारों के साथ
किसके लिए..
फूलो की रंगत को
सुगंध की संगत देने
बहती है पुरवाई
सुबह सुबह,
किसके लिए...
गहरी निन्द्रा मे भी
मुख पर मुस्कान
बिखेरने आ जाते हैं
स्वप्न..
किसके,
किसके लिए...
कलम भी
रचती है
नई शब्दावली
नये अर्थ
नई परिभाषाएं
किसके लिए..
सोचना कभी..
बताना मत,
अहसास
तुम्हारी स्वीकृति का
पहुंच ही जायेगा
मुझ तक..
क्योंकि दिल में ही
खुलते है
दिल के रास्ते,..
बस पूछना मत
इतनी शब्दयात्रा
किसके लिए...??

हम...

हम हैं
पुराने खयाल के
नये दौर के लोग
हमें देखते हैं
हिकारत की
नज़र से...
हम हैं
पुराने खयाल के
जिसमें
माँ-बाप
के रिश्तों का
सम्मान,
बड़े छोटे
का संविधान
माना जाता था,
तब चेहरे को कम
चरित्र को ज्यादा
देखा जाता था,..
हम हैं
पुराने खयाल के
जिसमें
संयम की परिभाषा
नियमों की मर्यादा
सर्वोपरि थी,..
हम हैं
पुराने खयाल के
पोषक अपनी संस्कृति के
परायी स्त्री को
मान दिया
अपनी को सम्मान दिया
बैठ गये
बिछौना बिछा कर
तो कभी खुली धरती पर..
कभी किसी को
अभिमान नही बताया..
हमारी ही
बुनियाद पे
पर खोले है तुमने
अपने नये खयालों के दरवाज़े
गर हम
पुराने नही होते
तो तुम नये कहां होते?
तुम्हे नया करने
के लिए ही
हमने पुराने होने का
खिताब पाया है,
और
तब ही तो तुमने
नये होने का
सिंहासन पाया है।

चलते रहो

चलते रहो पहुंच जाओगे
ठहरे तो ठहर ही जाओगे,
पांव की पदचाप चुपचाप
मीलों रास्ता नाप लेती है,
मंजिल भी राही को जानती है
मन उसका भांप लेती है,
जाने कब कदम बढ़ाओगे
चलते रहो पहुंच जाओगे...।

"सृजन की समीक्षा"

1.

आदरणीय दिनेश कनोजे देहाती जी की कुछ कविताओं व मुक्तक के साथ -साथ उनके आत्मकथ्य व जीवन परिचय को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

उनकी उपलब्धियां, प्रकाशन, प्रसारण से प्रफुल्लित मन जाकर जब उनकी रचनाओं से रूबरू हुआ, तो मन ने उनके लेखन के प्रतिबिंब को साकार किया।

अपनी रचनाओं में जहां एक और वह बंधन में बंधना नहीं चाहते.....
पर न बांध देहाती
आजाद भर उड़ान तो देख।

वहीं सामाजिक समता के लिए स्वयं को मर्यादा में रहने व बदलने का भी आदेश भी देते हैं
"जरूरतें तो मुंह चिढ़ाती हैं आदमी को
ज्यादा को कम में बदल ले तो अच्छा लगे |
और
"हम अपने दायरों से अपरिचित होते हैं,
संकुचन नहीं
संयमी प्रभावी हो |
वे केवल सपने देखने में विश्वास नहीं रखते बल्कि उन सपनों को पूरा करने के लिए जागना भी चाहते हैं.....

सपनों को साकार
करने का
मन लेकर
जागना चाहता हूं ..
और
चलते रहो पहुंच जाओगे ठहरे तो ठहरे ही रह जाओगे।
विचारों से आधुनिक किंतु, मनसे पुरातन संस्कृति को स्वीकारता उनका मन अपनी पुरातन संस्कृति को ही अधिक महत्व देता है।
हमारी ही बुनियाद में
पर खोलें हैं तुमने
अपने नए-नए ख्यालों के दरवाजे
गर हम
पुराने नहीं होते
तो तुम नए नहीं होते।।
जहां वे समाज व संस्कृति की बात करते हैं वहीं वे देश प्रेम से लबरेज होते हुए अपने देश की माटी को चंदन बना लेना चाहते हैं।
इस तरह परोपकार का संदेश देते हुए कहते हैं.. सूरज ,धूप ,फूल, चांद, सितारे ये अपने लिए नहीं कुछ करते ।इसी तरह तुम्हारी शब्द -यात्रा भी कर्म वीरों के लिए व समाज क को सही दिशा दिखाने के लिए होनी चाहिए ।

हम उनकी इस शब्द यात्रा के लिए उन्हें अनेकों **बधाई** और शुभकामना देते हैं। वे इसी तरह निरंतर सभी विधाओं में अपना सृजन कर समाज को चेतना, दिशा प्रदान कर संस्कृति के बीज बोते रहें।

डॉ वर्षा चौबे, भोपाल

2.

कवि दिनेश कनोजे देहाती जी की कविता मानव मन के विभिन्न भावो को उकेरती हुई सकारात्मकता व सार्थकता से परिपूर्ण है । कवि स्वयं भी कहते है कभी दिखाने के लिए नही लिखा, देखने के लिए लिखा कि कालान्तर मे भी देखूं तो वह मुझे भी प्रेरित कर सके.।
मानव मन मे हौसला का संचार करता हुआ कवि की "परिंदों की उड़ान"कविता देखे..
"पर न बाँध परिंदों के देहाती
आजाद कर उड़ान तो देख"
यह कविता नई ऊर्जा नया उत्साह तथा नये प्रयोग करने का साहस देता है ।
वही कवि की "आज " कविता मे माध्यम से यह संदेश भी देना चाहते है कि मनचाहा न मिलने पर भी अनचाहे को भी विचार मे सुधार कर

ले तो वो वह सकारात्मक सोच उत्तम परिणाम देती है ।

तुम भी जीत लोगे हर जंग जिंदगी की,
इरादों को दम मे बदल लो तो अच्छा लगे.

कुछ प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ती हुई कवि दिनेश जी की ये कविता देखे जिसमे कवि

संकुचन नही
संयम प्रभावी हो,
दूरगामी लक्ष्य
की प्राप्तियाँ
आप के व्यवहारिक
समीकरण का
संतुलन
चाहती है.

ये शब्द मन को आकृष्ट करता है वही प्रभाव भी छोड़ता है

"कब जागोगे" कविता पर नजर डाले तो कवि बनी बनाई वही राह पर चलने की एकरसता पर चोट करते हुए कहता है कि कब तक दूसरे के दिये रास्ते तय करोगो अपने सपने ,अपने जीवन का उद्देश्य पूर्ण करने

कब जगोगे?
क्या तुम्हारे
अपने रास्ते
अपने निर्णय
अपने सिध्दांत
अपने उद्देश्य नही है.

"किसके लिए " कविता मन के भाव को उकेरती उम्दा रचना है जिसमे आत्मसंतुष्टि की भावना का सुंदर चित्रण किया गया है कवि सूरज पुष्प व कवि का उहाहण दे कहते है कि सभी कर्म द्वारा तृप्ति व स्वत: सुखाय के सुख को पाना चाहते हैं ।

बस पूछना मत
इतनी शब्दयात्रा
किसके लिए...??

कवि अपनी रचना "हम" मे अपने पुराने विचार का अादर कर आज के युवा को सलाह देते है कि वे अपनी संस्कृति को न भूले क्योकि ये हमारे विचार जिन्हे वे पुराने समझते हैं अमूल्य व नये विचारो की बुनियाद है कवि लिखते हैं

तुम्हे नया करने
के लिए ही
हमने पुराने होने का
खिताब पाया है,
और
तब ही तो तुमने
नये होने का
सिंहासन पाया है।

कविता "नाम" की ये पक्ति ही ले

अस्तित्व का अंत भौतिक हो नैतिक नही,
कर्मवीरो का सदियों जिंदा नाम देखा है..।
जहाँ शिक्षा देती है वहीं कवि की ये कहना भी कर्मवीरो का जिंदा नाम देखा है बहुत प्रभावी है
"चलते रहो "कविता सतत् कर्म की प्रेरणा देते है । कवि कहते हैं चलते रहो पहुंच जाओगे...।
कवि दिनेश जी जहाँ कामयाबी के लिए समझैता को सही मानना क्या सही है ? ये सवाल अच्छा उठाया है वही उनके देश भक्ति से भरे हुये ह्रदय का प्रमाण दिया है उनकी कविता "दुआ" मे। वे कहते है कि धिक्कार समझ लूंगा इस जिंदगी को मैं,
वतनपरस्ती मे मुझसे कोई भूल हो जाए।
यदि सार मे कवि दिनेश कनोजे देहाती की कवित्व को समेटा जाय तो कवि की भावनायें उनके कलम से होती हुई सीधा दिल को छू जाती है । कवि की लेखनी सुविचार शिक्षाप्रद, हैसला देती हुई मानव के भावनाओ के बिखरे कई रंग समेटती है । ये सुंदर सुगम सहज शब्दो से कविता की सार्थकता को पूर्ण करती है । एक कवि के रूप मे वे अपनी अभिव्यक्ति को पाठक के दिल मे पहुँचाने मे कामयाब रहे हैं।

कंचन अपराजिता

3.

देहाती जी आपका हार्दिक स्वागत है , वाहहहहह आदरणीय आपने जिस तरह से काली स्याही से कागज पर उजाला ही लिखा । ये बात पूर्णतः सच साबित होती है आपके रचनाओं को पढकर ।
1.परिंदे को प्रतीक बनाकर लिखी कविता समाज को स्वैच्छिक जीवन जीने की प्रेरणा देती है ।
2.इरादों को दम में बदल लो तो अच्छा लगे वाहहहह क्या बात कही आपने आप हर कविता के माध्यम से संदेश देना चाहते है कविधर्म यही होता है ।
3 सूक्ष्म मे मोक्ष रूपी कविता लाजवाब वाहहहहह
4.मुझे सबसे अधिक भा लिया हुआ कविता है "उठ तो गये कब जागोगे? अद्भुत प्रश्न हर व्यक्ति को अपने आप मे अवलोकन करने हेतु प्रेरित रचना ।
एक से बढकर एक रचना सार गर्भित

सठीक मन को स्पर्श करने वाली है ,
मन मे प्रश्न उठाने वाली है।
आपको पुनः केंद्रीय रचनाकार
विशेषांक सप्तह कवि हेतु
हार्दिक **बधाई**।

श्रीमन्नारायण चारी

4.

नमस्कार "अंतरा परिवार , नमस्कार
दिनेश कनोजे देहाती जी , आपको
केंद्रीय रचनाकार विशेषांक में सप्ताह
के कवि के रूप में प्रस्तुत होने पर
बहुत बहुत **बधाई** और शुभकामनाएं ।
आपकी सारी रचनाएं पढ़ी , सभी एक
से बढ़कर एक बेहतरीन,भावपूर्ण और
प्रभावी हैं! आपकी रचनाओं की
विशेषता है कि.. वे... सार्वकालिक एवं
आशावादी हैं... लोगों को सतत आगे
बढ़ने की प्रेरणा देती... सत्य शिव
और सुन्दर से ओत प्रोत हैं !
जैसा कि आपकी प्रथम
रचना #परिंदों की उड़ान ..से ही यह
स्पष्ट हो जाता है,
नदी की लहरों से आगे बढ़
समन्दर का तूफान तो देख!
पतझड़ के पुरवा से हट
आषाढ़ का तूफान तो देख...

ऐसे ही दूसरी रचना.. #आज भी
अहम् से दूर रहने का सुन्दर सन्देश
देती है..
मैं को हम में बदल लो तो अच्छा
लगे !
खुशी में गम को बदल लो तो अच्छा
लगे!
आपकी सभी रचनायें हृदयग्राही
हैं..मानव,समाज,और देश को सत्य से
रूबरू कराती सुन्दर संदेश दे जाती हैं!
#प्रश्नों के घेरे में...आधुनिक कविता
की सुन्दर झलक दे जाती है!
दूरगामी लक्ष्य
की प्राप्तियाँ
आपके व्यवहारिक
समीकरण का
संतुलन चाहती हैं !
आपकी काव्य अनुभूतियाँ सत्य के
धरातल का दर्शन कराती हैं !
एक कवि के आंतरिक द्वन्द को
उद्वेलित करती हुई.. आपकी
रचना #कब जागोगे में खुद को ही
सन्मार्ग दिखाने का खुद से ही
वार्तालाप अति सुन्दर बन पड़ा है !
उठ तो गये हो,
कब जागोगे !
या रोज की तरह
पिछलग्गू
बन भागोगे !

कविता हम में पुरानी और नयी पीढ़ी के बीच बढ़ती दूरियों और ख्यालात में असामंजस्य और हमारी पुराने संस्कारों की खूबियों का बखूबी सहज चित्रण किया है
मानवीय संवेदनाओं को उकेरने में आपकी रचनायें सक्षम हैं!
वहीं मानवीय संवेदनाओं के साथ आपकी कविताओं मे हास्य व्यंग्य का पुट भी बड़ी सरलता से आ जाता है!
हम होंगे कामयाब
ख्याल अच्छा है!
कैसे होंगे साब,
पर सवाल अच्छा है!
छन्द मुक्त कवितायें,गीत, गज़ल,मुक्तक हर विधा की आपकी रचनायें पाठकों को अपनी तरफ आकर्षित करने में सक्षम हैं..
वहीं #दुआ मेंआपका अपने देश के प्रति अगाध प्रेम भी परिलक्षित होता है.. ईश्वर करें आपकी हर दुआ कबूल हो..
और आप हिन्दी साहित्य जगत के आकाश में स्वर्णिम सूरज बन... सदैव देदीप्यमान रहें!
आपको निरंतर हर विधा में सफलता मिलती रहे, मां सरस्वती का वरद हस्त आप पर बना रहे, पुन: आपके उज्जवल भविष्य की कामना करते हुये,आपको हृदय तल से बहुत बहुत **बधाई** ! सादर नमन

किरण मिश्रा स्वयंसिद्धा

5.

आदरणीय देहाती जी
सादर प्रणाम !
आपकी रचनाओं का रसास्वादन देरी से कर पाया इसके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ| आपकी लेखनी की सशक्त क्षमता से रूबरू होकर ऐसा महसूस हुआ है कि आपने न केवल अपने रचना धर्म और कर्म को बखूबी समझा है अपितु साहित्य के मर्म को भी सहज ,सरल और सटीक शब्दों के माध्यम से उजागर किया है | आपकी लेखनी सदैव साहित्य सेवा में चलती रहे , इसके लिए हार्दिक शुभकामनाएँ...
अंतरा समूह का भी हार्दिक आभार कि उन्होंने आपकी प्रतिभा से रूबरू करवाया |
सादर,..

डॉ० प्रदीप कुमार "दीप"

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.) हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन
१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com